ॐ

सतगुरु-प्रसाद

24.11.06

~~आकाशवाणी~~:- हमको आज भी ये लगता है कि निराकार का ज्ञान है और ये लोग फायदे में बैठे है, तो इनका काला मुहँ नहीं होगा तो सफेद मुहँ होगा क्या? जो उसी समय मैंने लीला देखी तो मेरे को हैरानी हुई तो ये लोग खाली साकार भक्ति में खुश थे। इससे हमको अनुभव मिलता है इसलिये हम तुमको बोलते है गीता के ज्ञान से बड़ी प्रीत रखो।

भ.:- भ. बोलते है कि गीता के ज्ञान में प्रीत रखो, साकार भक्ति में नहीं। साकार भक्ति क्या है? गुरु को भ. समझ कर उसके लिये प्रसाद बनाना, उसकी सेवा करना, उसके लिये चादर बिछाना, उसको देखना और निरा. की भक्ति क्या है? घट-घट वासी को देखना, सब में नारायण को देखना।

दृष्टांतः- संत कबीर था उसके पास संत लोग आये बोले हमको तो भ. का दर्शन नहीं होता है तुमको कैसे हो जाता है? तो संत कबीर बोले कल सुबह तुम्हारे पास भ. आयेंगे तुम सब उसे अच्छे से भोग लगाना। उन लोगो ने पूरी तैयारी की। एक भैंस आई उसने सब खा लिया तो एक ब्रम्हाण ने उसे लाठी मारी। फिर सब संत कबीर के पास आये बोले भ. तो आया नहीं। संत कबीर बोले भैंस के रूप में कौन था वो भी भ. ही था। भ. आया था तुमने उसको भ. करके नहीं देखा, घट-घट वासी करके नहीं देखा। तुम अपनी धुन में रहे। भ. ही भैंस का रूप रख कर आया था। भ. कोई न कोई रूप रख कर ही आयेगा तुम हर रूप में भ. देखो। तुम पहचानो, कि भ. हरएक रूप में तू ही है जो सच्चा होता है उसकी पहचान बड़ी होती है। रामायण में लव-कुश से सबने युद्ध किया, उन्हें पहचाना केवल हनुमान ने। जैसे हनुमान ने पहचाना की ये बच्चे भ. राम के है, इसी तरह गुरु भी हमें

यह पहचान देता है कि हर मनुष्य भ. ही है। किससे भी आप ओवर रूल नहीं करो, किसी को तीखा नहीं बोलो, किसी से राग-द्वेष, तू मां नहीं करो, भ. जो करता है राइट ही करता है। ऐसे हम बोलते है निरा. जो तू करता है राइट ही करता है। जो कोई भी कुछ करता है वो हमारे भलाई के लिये ही करता है, अगर हमने भलाई शब्द पक्का नहीं किया लाइफ में, तो हमने कुछ भी पक्का नहीं किया। जो कुछ होवे जैसा भी होवे, असहनीय पीड़ा होवे तो बोलो भ. इसमें मेरी भलाई हो गई। भलाई शब्द तुम्हारे मुख पर होना ही चाहिये। वाह साई वाह, वाह साई वाह। सारा दिन वाह-वाह निकले। हाय-हाय न निकले। हर वक्त भलाई दिखे कि इसमें भी कोई भलाई होगी-2। बोलो भ. तेरी हर बात में राज है, भलाई है। जो बात आये उसमें भ. मेरे को ऊपर ही चढ़ाता है, मुझे आकाश में पहुँचाने के लिये ये लीला हुई। जो खेल बन कर आये उसमें अंदर से नाचो, बोलो वाह साई वाह। वाह साई वाह करके सब बातों को उड़ा दो कि कोई कुछ करता ही नहीं है, तू मौन है तो सारी दुनिया मौन है, तू अकर्ता है तो सारी दुनिया अकर्ता है, तू साक्षी है तो सारी दुनिया साक्षी है।

[illegible]- जो कृष्ण ने बोला है- सच बोला है कि आत्म चिंतन, आत्म विचार, आत्मदृष्टि रखो, बाकी आने जाने की बात नहीं करो। कल भी एक पागल मिली बोली भ. कानपुर कभी आओगे, लखनऊँ कभी आओगे हमने बोला तू तो पाण इधर कानपुर बिसार कर बैठ न। हमको तो भूली पड़ी है bombay तू हमको लेकर चलेगी तो क्या होगा। हमारे लिये न देश है, न वतन है, न घर है, न घाट है। पाण हम तुम्हारे लिये बैठे हैं कि तुम्हारा बंधन कटे। उधर तो तुम चार घंटा आयेगी चार घंटा घर में जायेगी और इधर तो तुम्हारे लिये फ्री मैदान पड़ा है। रमण महर्षि को भी किसी ने बोला तुम

फलाणे शहर में चलकर सत्संग करो उसने बोला कितने शहर में चलूं। सब संत जो भी घूमते है वो सौदा गिरी करके आते है। उसको दर्द थोड़ी है कि हमारे से अच्छा कोई बने। हम तो एक को बनाऐगा तो तुम लाँखो को बनाऐगा। अभी एक कोई सत्संगी अच्छे से ज्ञान समझे तो दूसरे को बताती है न। हम उधर थोड़ी जाते है, सब जगह संत थोड़ी जाते है जरूरत क्या है उसके पास जाने की? जो चुन-चुनकर आयेगा वो मेरे पास पहुँचेगा। किसके भी थ्रू आकर पहुँचेगा मेरे को आने जाने की तकलीफ में क्यों डालते हैं? तुम खुद घर बार मिथ्या नहीं करते है गुरू ने घर बार मिथ्या किया है तो वो रूले पिने हवा खाये क्या? तुमको शौंक होना चाहिये कि मेरा घर मिथ्या कैसे होवे? मै कैसे मिथ्या हो जाऊँ जो मैं सब कुछ छोड़ जाऊँ? तुम पाण बोलो भ. अच्छा है आप bombay बैठे हो हमारा बंधन कट गया है क्योंकि दुनिया में एक भी जगह नहीं है जो तुमको कोई छोड़े। इधर तुमको गुरू अपने दरवाजे पर रखकर सारी दुनिया से फ्री करेगा। इधर सगे वाला भी तुमको बुलाने नहीं आयेगा, गुरू के पास बैठी है इसको कोई नहीं हिलायेगा। अच्छे कर्म में कौन बुरा काम करेगा। पर और किसी भी कोने में जाओ तो तुम्हारे पास सगे वाला आयेगा, दोस्त आयेगा, दुश्मन आयेगा, सब आयेगा। एक गुरू का घर हैं, जिधर कैद है। एक विधवा हमको बधाई देकर गयी कि तुम चार बरस से एक पलंग पर बैठी हो तुमने कोना ऐसा पकड़ा है जहां तुम्हारे पास कोई माया आ नहीं सकती है और वो खुद रूलती पिनती है, खुद इतना नहीं बैठती है, खुद हंसी मजाक करके घूमती रहती है पर इतना समझती है कि हम फिर कमजोर हो जाते है, दीन हो जाते है फिर गुरू के पास आना पड़ता है। हम हंसी मजाक करके कमजोर हो जाते हैं फिर गुरू के पास आते हैं। मेरे को ज्ञान दियो तो एक वारी हम गुरू से ऐसी भीख मांगे

जो हमको फिर भीख माँगना न पड़े।

भ.:- ऐसा ज्ञान का कलर चढ़ा कर जाओ, एक बार ऐसा भिखारी बनो जो पूरा ज्ञान लेकर जाओ कि कही भिखारी न बनना पड़े। ज्ञान की भी भीख न माँगो। किसी के आधार की जरूरत न पड़े।

[illegible]:- उन लोगों ने दादा के समय अपने को क्यों नहीं जीता? किसको दस बरस हुआ, किसको बीस बरस हुआ क्यों नहीं इसको बोला ये अमर आत्मा है, क्यों नहीं उसका गाना गाया कि ये अमर आत्मा है, इतनी जो सेवा किया तो अच्छा ही किया हमको जगाया जो हम आंनद में रहे न। उसके शरीर पर हम क्यों ऐसा रोये? हमारी तो ये पहले दिन की ही बात है कि हमको शरीर नहीं देखने का है। ऐसा मन में कसम उठाया है आत्मा का।

भ.:- भ. ने सूरज भ. को बोला यदि मैं दादा को देह करके देखूं तो मुझे दादा से दूर कर देना, मेरी आँख जला देना। मैं गुरु को अगर भ. न देखूं एक पुरुष करके देखूं तो मेरे लिये पाप है। भ. ने दादा भ. को हमेशा भ. ही करके देखा। अपने को भी भ. जानते थे। दो साल हुआ भ. को सत्संग सुने सूरत से एक माई आई भ. को बोली दादी तो भ. बोले मैं दादी-वादी नहीं हूँ मैं भ. हूँ। भ. पूरे निश्चय में थे हम भी पूरे निश्चय में रहे कि मैं आत्मा हूँ। तुम भ. अपने को नहीं बोल सको, आत्मा तो बोलो, कि देह नहीं हूँ मैं आत्मा हूँ।

[illegible]:- आत्मा है कि मैं देह न देखूं, सबको बोलते थे आत्मा देखो। पहले से निश्चय था कि कभी भूल से भी देह न देखूं। जो भ. है तो हम देह क्यों देखे? भ. है तो मेरे अंदर भी वो ही है, बाहर भी वो ही है, ऊपर भी वो ही है, नीचे भी वो ही है। जब सर्व में पेखे भ.-----। जब वो आते है तारने के लिये तो हम उनको मरेला क्यों समझे? वो तारने के लिये आये है, हमको जगाये, हम फिर उसको देह-

समझे कितनी बुरी बात हो गयी।

भ.:- गुरू हमको जगाने के लिये आये और हम बोले कि गुरू मर गया, चला गया, ये हम कैसे बोलेंगे? अरे वो रह गया मैं पाण मर गया। गुरू रह जाये, मैं मर जाऊँ। तुम कभी नहीं बोलना गुरू मर गया, शरीर शांत हो गया, चला गया, समाधि ली गुरू तो है ही है। गुरू कभी कहीं जाता ही नहीं हैं दादा भ. अभी भी बैठे हैं, भ. अभी भी बैठे हैं हम पाण नहीं हैं जो हम हस्ति लेकर बैठे हैं कि मैं हूँ मैं पाण नहीं हूँ।

[illegible]:-कभी भी उसके लिये संकल्प विकल्प नहीं करने का है कि वो है या नहीं हैं। आत्मा है ही है। भ. है ही है। पैगम्बर भी है ही है। उसकी वाणी सच है न। वाणी में ही तो मजा है। गुरू है वाणी, वाणी है गुरू---------। आज खाली एक भी शब्द समानता का लियो तुम्हारे मुख से कोई शब्द नही निकलेगा गूंगा हो जायेगा। गूंगा, बहरा, अंधा हो जायेगा।

भ.:-एक ही शब्द समानता का लो कि सब में भ. है तो तुम्हारा मुख गूंगा हो जायेगा। भ. सब में देखेंगे तो मुख बंद हो जायेगा, हद्‌य खुल जायेगा। सब में नारायण भ. का ही दर्शन करो।

[illegible]:-कोने में बैठकर विचार करेगा। कई बगीचे पड़े है, समुंदर के किनारे पड़े है, तुम एकांत ढूंढते हैं न, तुमको मिल जायेगी। जे तुमको कोई रस नहीं होगा।

भः- जब कोई रस नहीं होगा तो निरा. तुमको एकांत दे देगा तुमको ढूढ़ना नहीं पड़ेगी, कोना तुमको बता देगा इस कोने में बैठ कर तप-जप करो, ध्यान करो, समाधि करो, अंदर परमात्मा को रिझाओ, भजन गाओ, वाणी पढ़ो, वाणी लिखो।

[illegible]:-हमको कोई रस नहीं था तो हम घर में बाहर थल्ले पर बैठकर भी सोचते थे, बगीचे में भी जाकर सोचे,

कोई मना थोड़ी करेगा। जे तू प्रेम से एकांत में बैठेगा वृक्ष के नीचे और ख्याल करेगा अपने घर का, तो वो एकांत नहीं मिली न। जभी तू घर से खाली होकर जा। एकांत भली लो कई घर खाली पड़े है, तुमको शांति कहां है। तुम्हारा मन पकड़ा पड़ा है कैद में तो तुम बैठ नहीं सकेगा। बैठेगा वो जो तन मन एकरस करेगा।

~~भ.:- एकांत में बैठना भी हिम्मत वाले का काम है कुर्बान जाऊँ उस मनुष्य पर जो एकांत में~~ बैठ कर अपनी आत्मा का ~~आनंद ले रहा है।~~

दृष्टांतः- एक संत शांत में बैठा था तो एक मजदूर बोला ये कितना आराम से बैठा है, मुफ्त की रोटी खाता है तो संत बोला तू बैठ मैं तुझे दोनों समय खाना देगा और पैसा भी देगा। जब मजदूर बैठा तो वो बैठ ही नहीं सका, तंग हो गया, बोला कि मुश्किल काम है बैठना, न हँस सकते है, न बोल सकते है। मुझे तो मेरा काम ही करने दो, शांत बैठना मेरे बस का नहीं है।

[redacted]:- वो बोलता है मेरा सारी दुनिया में किसी से काम नहीं है।मेरा अपनी देह से ही मतलब नहीं है। पता नहीं देह का उनको तो औरो से क्या मतलब है। ये आत्म नेष्ठा के लिये तुमको अपना ही गौत करना पड़ेगा। ये लेक्चर करने का नहीं है, न ही लेक्चर है, पर जो भी तुमको सामने मिले तुम मुस्कराओ जो तू है सो मैं हूँ। तो वो हैरान हो जायेगा।

भ.:- सबको मुस्कुराओ कि जो तू है सो मैं हूँ, मैं हूँ कहां, देह करके मैं हूँ ही नहीं, मै भ. हूँ। बेखबरी में आ जाओ। कुछ भी देखो सुनो सब विस्मृत हो जाये। जैसे किसी की बात सुनी ही नहीं, देखा ही नहीं, खाया नहीं, बैठा नहीं, सोया नहीं, तन मन एकरस लीनता में चला जाये, ब्रह्म में चला जाये। भ. में लीन रहो....................।

[redacted]-दादा भ. से एक आदमी ने पूछा-आज की नई

[redacted]:–दादा भ. से एक आदमी ने पूछा–आज की नई खबर कौन सी है वो दादा को normal natural इंसान समझकर दुनिया की खबर पूछ रहा था। दादा ने कहा– नई खबर है कि तू भ. है अभी बात कर इधर। वो दादा भ. से बहस करने लगा मैं भ. कैसे हूँ। फिर वो दादा को घर लेकर गया उसकी स्त्री ने भी ज्ञान सुना। बोलता है दुनिया के सब संतों के पास जाता हूँ कोई नहीं बोलता है कि तू भ. है। ऐसी बड़ी बात कोई नहीं बताता है क्योंकि दादा गृहस्थी था उसको रिश्वत चाहिये नहीं थी वो तो सच का सच बता देता है। तुमने कभी ऐसी मुलाकात किया है किसी से। तुम हेरा फेरी वाले आदमी है जैसा आदमी मिलेगा, वैसी बात करेगा। सगेवाला मिलेगा तो सगेवाले की बात करेगा। तुम एक आदमी तो हाथ उठाओ जो बोले जो तू है सो मैं हूँ।

भ.:– गुरु बोले की जो तू है सो मैं हूँ कितनी बड़ी बात है। नहीं तो गुरु, गुरु ही रहता है, शिष्य, शिष्य ही रहता हैं।

[redacted]:–तुम तो अभी माया काट रहे है, फलाणा काट रहे है ये काटने की बात थोड़ी है। सच आया तो झूठ गया, तो वो जगत मिथ्या हो गया। तू विचार देता है अपने को टोटली जगत नहीं है, ये धुएं का पहाड़ है। जैसे वारी होती है पर हम समझते हैं पानी है। तुम बोलते है जगत है पर तेरे फुरने मे जगत है।

भ.:– रेगिस्तान में जाओ तो बालू पानी के समान लगती है। प्यास लगती है तो पानी समझ कर जाते हैं लेकिन बालू ही बालू होती है। ऐसे जगत है नहीं, फुरने का जगत है।

[redacted]:– तुम्हारे संकल्प में जगत है। तुम्हारे द्वैत में जगत है। नहीं तो जगत बिल्कुल नहीं है। जरा भी जगत की हस्ति नहीं है। हम तो जगत को ढूंढ़ते थे कि ये लोग जगत किसको बोलते है? माया किसको बोलते है? अपना ही मन है। बुरा मन है। चोर भी मन है। द्वैत है नहीं पर संकल्प

विकल्प तुम्हारा काम करता है।

भ.:- किसी का भी तुम संकल्प विकल्प कर लेते है ये नहीं बोलते कि मैं हूँ कहाँ। I am not अपने से पूछो तू है कहाँ तेरी हस्ति किधर है, तीन काल मे मेरी हस्ति नहीं है, मैं कौन हूँ सत्संग करने वाला, मैं कौन हूँ ज्ञान देने वाला, सेवा करने वाला, मैं कौन नौकरी करने वाला, कर्ता पना आये ही नहीं कि मैं कुछ हूँ।

[redacted]:-तुम घर में भी बैठो द्वैत का संकल्प करो तो इतना तुमको द्वैत सामने दिखाई देगा। पर तुम अद्वैत में मुस्कुरा कर चलो, झुककर चलो, सबको बोलो तू मेरी आत्मा है, तू मीठा स्वरूप है, सबको ऐसा प्यार करो जैसे भ. को करते है, सब तुम्हारी आत्मा है, तू ही self है उसमें हमारा जाता क्या है, प्यार करने में सबसे?

भ.:- सबको मीठा भ. करके देखो, अपना प्यारा-न्यारा भ. करके देखो, हर मनुष्य को नारायण करके देखो।''नामदेव ने पकाई रोटी कुत्ते ने उठाई, पीछे घी का कटोरा लिये जा रहा। बोला रूखी तो न खाओ स्वामी घी तो लेकर जाओ।'' कुत्ते को भी बोलो भ. तू ही इस रूप में है साक्षात् नारायण इस रूप में है, उसकी आँखो में भी नारायण की चमक निकल रही है। सबकी आँखे भ. की आँख है, सबके हाथ भ. के हाथ है, सबके मुख भ. के मुख है, सबके पैर भ. के पैर है। चारों ओर देखो भ. ही भ. है सारी दुनिया भ. से भरी पड़ी है। भ. का विराट स्वरूप देखो ।

[redacted]- ऐसा नहीं कि एक किसमें अटक गया तो मर गया तो एक से प्यार बंधन है। जिसका सर्व से प्यार है वो सौदा ही ये करता है कि मेरा सारी दुनिया से प्यार है।

भ.:- सारी दुनिया मेरी चीच में आ जाये, माना सारी दुनिया का सुख मुझे मिथ्या लगे। तीन लोक की राजाई भी कौओ की विष्ठा के समान लगे। कृष्ण ने गीता में बोला अर्जुन

सारा जगत मेरे एक अंश में है क्योंकि जिसने भी सारा जगत मिथ्या समझा, झूठा समझा उसने किसी बात पर सत्ता नहीं दिया, सबमें भ. देखा तो उसको भी सारा जगत मिथ्या लगेगा।

[illegible]:- तुम देखेगा ये साधु चार घंटा आँख बंद करके समाधि करता है तो ये कमाई करता है। ट्रेन में, बस में बैठकर चलते फिरते कमाई होती है मेरी आँख ने क्या देखा? लूला, अंधा देखा तुमने एक आना उसको दिया हम लूला, अंधा देखेगा ही नहीं तो एक आना कैसे उसको देगा। हम रास्ते में भी अंधा होकर जल्दी-2 जाता है कि मेरे को रास्ते में कोई न दिखाई दे। जब अपना ही रूप पहचानने का है तो दूसरा देखने का क्या मतलब है।

भः- दृष्टांतः- एक राजा ने एक कमरे में ऐसे शीशे लगाये कि वो रोज आकर हँसता था अपनी सारी थकान उतार लेता था। एक कुत्ता आया उस कमरे में तो भौंक-भौंक कर मर गया। ऐसे ही संसार में कई लोग मर जाते है दूसरा-दूसरा देखकर, जो अपना आप देखता है उसके लिये कोई समस्या ही नहीं है। अंदर ही अंदर संकल्प करता है कि है ही भ., है ही भ.। इस रूप में भ. ही तो आया ऐसे अंदर में सुजागी आ जाती है। जब अपना ही आप देखना है तो दूसरा देखने का मतलब ही क्या है?

एक पतन्जलि ऋषि था बूढ़ा हो गया तो बोला मेरा ये शरीर भी किसी के काम आये। जंगल में एक शेर के आगे खड़ा हुआ सोचा कितनी खुशी की बात है कि ये मुझे खा कर तृप्त हो जायेगा और शेर ने उन्हें खा लिया संत को मजा आ रहा था कि शेर तृप्त हो रहा है। पतन्जलि ऋषि ने योग, ध्यान समाधि पर बहुत किताबें लिखी है।

ऐसे ही हम पर कोई हँसे तो मजा आना चाहिये। कि ये मेरे पर हँस कर खुशी तो लिया ये नहीं लगना चाहिये कि

टॉट किया, मेरे को नीचे किया। भले मेरे को नीचे करे, हँसे पर उसने खुशी तो लिया। सारा दिन देखो इसने मेरे को देखकर कोई सुख तो लिया।मेरे को सेवा में नीचे करके खुशी तो लियइं इसने खुशी लिया माना मैंने ही खुशी लिया उस रूप में भी मैं ही तो हूँ, गीता का सारा सार है कि मैं ही तो हूँ, यही अद्वैत मत है सारा दिन बोलो मैं ही तो हूँ। जहाँ तुम्हारा मन जाये बोलो मैं ही तो हूँ मेरा ही तो रूप है,मेरी तो जान है, मेरे ही प्राण है। मेरे से अलग कोई नहीं है।

[illegible] काम से काम मतलब से मतलब, बात से बात हो गयी। पर तुम बोलो ऐसी कोई बात करता है कि जो तू है सो मैं हूँ। भ. अर्जुन को बोलता है कि मैंने और तूने कई जन्म लिये है पर मैं जानता हूँ, तू नहीं जानता है।

भ.:- नहीं जानता है कि मैं पहले भी आत्मा था, अभी भी आत्मा हूँ, आत्मा ही आत्मा करके जानता है।

[illegible] देखो उसकी पहचान। मैंने भी अनेक जन्म लिया है पर मैं जानता हूँ, कि सबमें मैं हूँ। तू नहीं जानता है, क्योंकि तू अर्जुनपने में, देह में अटक गया है। जो देह के पर्दे को हटाया नहीं तो विशालता में आये कैसे ? विशालता में हम तब आते है जब देह के पर्दे को फाड़ते है।

भ.:- एक आदमी सबसे जीतता था एक दिन सपने में देखा कि मैं हार गया हूँ तो रोने लगा। सुबह उठ कर देखा कि मैं अपने से ही हारा,मैं अकेला ही था और रोने लगा। इस बात से गुरु ने उसे ज्ञान दिया कि तू सब में है।जिससे तू जीतता है वो भी तू है। उसने खेल ही बंद करके,नौकरी करने लगा।

एक राजा का पहलवान, मिसकीन था वो गुरु के कहने पर अपने को हरा दिया। कुश्ती में एक पतले आदमी से हार गया। तो राजा ने उसकी बहुत बेइज्जती की और पैसा भी नहीं दिया। मिसकीन खुशी हो गया क्योंकि उसने गुरु के वचन पर अपने को हरा दिया। तुम भी दुनिया में हार जाओ

झुक जाओ। ऐसा झुक जाओ जो तुम्हारे अंदर से कोई शब्द निकले ही नहीं। कोई तू, मां की बात ही न निकले, तुम्हारा चेहरा एकरस, मुस्कुराहट भरा हो, वाह साई वाह करते रहो।

[redacted]:– देह अध्यास से मिलता क्या है? पहले भी तुमने विचार दिया, मिला क्या तुमको? भली तुम देह में रहो पर एक खखड़ा भी नहीं मिलेगा तुमको। आत्मा में रहो अभेद होकर रहो, सबको अपनी मीठी आत्मा करके देखो। कोई भी तुमको दस गाली दे तुम उसकी आँख में देखकर मुस्कुराओ। मुस्कुरा–2 कर आखिर वो बोलेगा तुमको शोक नहीं हुआ तो वो पाण पछतायेगा। बस भ. जग जायेगा उसी समय तेरे में भी जगा आगे वाले में भी जगा।

भ.:–कोई भी तुमको गाली दे,क्रोध करे तो वो पछतायेगा, क्रोध का अंत पश्चाताप ही होता है।तुम कभी लाइफ में क्रोध नहीं करना,कभी शब्द नहीं देना। तुम्हारे शब्द देने का मतलब तुमको पछताना ही पड़ेगा एक शब्द भी व्यर्थ नहीं बोलो। जब मीठी वाणी होवे तभी बोलो। वाणी में तीन बातों का ध्यान रखो 1.जब बहुत मीठा हो तो बोलो। 2.बहुत सच्चा होवे। 3. जरूरत वाला होवे तो बोलना। नहीं तो बोलना माना परमात्मा की हिंसा करना,परमात्मा को भूल जाना।घड़ी एक विसरू ––।

प्रेमी:– जब इमोशन होता है तो मीठा नहीं बोल पाते हैं?

भ.:– हाथ जोड़कर, पाँव पढ़कर सबसे माफी माँगो। तुमको आदत होना चाहिये कि हाथ सारा दिन जुड़े ही रहे। गुरू के आगे तो मुस्कुराते है, झुकते है, पाँव पढ़ते है पर सब के आगे झुक जाओ। भ. तू इस रूप में मेरी परीक्षा लेने के लिये आया है। इतना भ. भ. करो कि उसको हमारा वाइब्रेशन जाये। इमोशन क्यों निकलेगा फिर?

भजन:–1. ओंकार–2 जपिये नाम बार–बार।

2. एक रतन सजा है अंबर में । {पेज न. }

❁ ओम ❁

❀ॐ❀

<u>सतगुरु-प्रसाद</u> 25-11-06 शाम

<u>भ.</u>:- ये अज्ञान का शत्रु है ज्ञान, ऐसे गुरु से लिया हुआ ज्ञान कोई नाश नहीं कर सकता है ये मधुर विधा है, मीठी वाणी है। संसार की वाणीयाँ है वो पक्षी की भाषा है।

जो गुरु की वाणीयों से नहीं मिल सकता है वो गुरु के इशारे से मिल जाता है। कई बातें होती है जो इशारा काफी होता है वाणी काम नहीं कर सकती है। वाणी से नहीं समझा सकते है कि भोग रोग है, सब असत् है, तुम भाई से नहीं मिलो, तुम बहन से नहीं मिलो, तुम बात नहीं करो वाणी से नहीं समझा सकते है गुरु की अंदर में प्रेरणा, इशारा आता है। गुरु के इशारे, प्रेरणा, भाव से जो ज्ञान लगता है वो सच्चा ज्ञान लगता है। वाणी से भी ऊपर इशारे से। जब गुरु के इशारे से चलेंगे तो मालूम पड़ेगा कि गुरु मेरे से मिला है अंदर संतोष होगा। राइट ही चलेगा उसको कोई दोष नहीं आयेगा। वाणी में दो बात मानेंगे, तीसरी बात नहीं मानेंगे, इशारे में तो हर बात मानेंगे।पूरा निरा. में मन रखना पड़ेगा, पूरा आरांम होना पड़ेगा, पूरा मोह छोड़ना पड़ेगा। गुरु तुम से नहीं बोलेगा इससे मिलने नहीं जाओ। गुरु कैसे बोलेगा कि बहन-भाई, मां से नहीं मिलो। पर गुरु का इशारा तुम्हारे अंदर आयेगा कि जगत मिथ्या है तो मैं कैसे बात करूँ? इशारे से तू जायेगा, इशारे से तू नहीं जायेगा तो गुरु के ऊपर दोष नहीं आयेगा, नहीं तो हर बात गुरु पर आती है, कि गुरु ने मना किया होगा तू बोलेगा कि मेरे को तो निरा. का निश्चय है। एक दिन भ. को दादा भ. ने बोला कि किसी संत से मिलने चलते है तो भ. ने बोला मेरी बुद्धि बहुत होशियार है कुछ न कुछ विकार लेकर आये इसके लिये मैं नहीं चलूँगी। तो दादा भ. खुश हुये कि इसको किसी के दर्शन की अभिलाषा नहीं है ये खुद भ. है। तो वाणी से ज्यादा इशारा समझा ना। इशारा था कि नहीं चले।

" ओम "